Printed Pages : 7 Roll No.....

M/Sem IV/477

M.A. (Semester IV) Examination, 2014-15

Pali

Group-B Abhidhamma Literature

Paper : Course XV

Sanskrit Abhidarma Literature

Time : Three Hours ***Full Marks : 70***

(Write your Roll No. at the top immediately on the receipt of this question paper)

Note: **All** questions are compulsory.

सभी प्रश्न अनिर्वाय हैं।

Section - A

खण्ड – अ

Note: Attempt **all** questions of this section answering each in **400-500** words. Each question carries **15** marks.

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **400-500** शब्दों में देते हुए इस खण्ड के **सभी** प्रश्नों को हल कीजिये। प्रत्येक प्रश्न का मान **15** अंकों का है।

P.T.O.

1. Writing the importance of the Arthaviniscayasūtra discuss that this is a special type of the sūtragrantha in which abhidharma has been explained.

अर्थविनिश्चयसूत्र के महत्व को लिखते हुए विवेचन कीजिये कि यह विशेष प्रकार का सूत्र ग्रन्थ है, जिसमें अभिधर्म की व्याख्या की गई है।

OR

अथवा

Explain five Aggregates of clinging as discussed in Arthaviniscayasūtranibadhana.

जैसा अर्थविनिश्चसूत्रनिबन्धन में विवेचित है, पञ्चोपादानस्कन्ध की व्याख्या कीजिये।

2. Explain the following words in the light of the commentary of arthaviniscaysūtra :

Mayā, Ekasmin samaye, śrāvstyāṃ, Pūrvārāme.

अर्थविनिश्चयसूत्रनिबन्धन के प्रकाश में निम्न शब्दों की व्याख्या कीजिये :

मया, एकस्मिन, समये, श्रावस्त्याम्, पूर्वारामे।

(vii) Write the number of hot hells according to Arthaviniścayasūtra.

अर्थविनिश्चसूत्र के अनुसार उष्ण नरकों की संख्या लिखिए।

(viii) Accordimg to arthaviniscayasūtra write the number of feelings.

अर्थविनिश्चयसूत्र के अनुसार वेदनाओं की संख्या लिखिये।

(ix) How many cold hells are there ?

शीत नरक कितने होते हैं ?

(x) Becoming is conditioned by.....

भव.....के प्रत्यय से होता है।

Section - C
खण्ड – स

Note: Answer the following very short answer type questions. Each question carries **1** mark.

निम्नलिखित अति लघुउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का मान **1** अंक है।

8. (i) To which place did Bhikṣu vīryaśrīdatta belong ?

भिक्षु वीर्यश्रीदत्त किस स्थान से सम्बन्धित थे ?

(ii) How many faculties (Indryas) are in number ?

इन्द्रियाँ संख्या में कितनी होती हैं ?

(iii) Brahmavihāras are in number .....

ब्रह्मविहार संख्या में.....होते हैं।

(iv) How many right efforts are there ?

सम्यक प्रधान कितने होते हैं ?

(v) How many powers are there ?

बल कितने होते हैं ?

(vi) Special Dharamas of the Buddha are in number.....

बुद्ध के आवेणिक धर्मों की संख्या है.....

OR

अथवा

Discuss 'frame work' of sūtra as has been explained in the commentary of Arthaviniścayasūtra.

अर्थविनिश्चयसूत्रनिबन्धन की व्याख्या के अनुसार 'सूत्रशरीर' की विवेचना कीजिये।

Section - B
खण्ड – ब

Note: Explain any **three** of the following. Each question carries **10** marks.

निम्नांकित में से किन्हीं **तीन** की व्याख्या कीजिये। प्रत्येक प्रश्न का मान **10** अंकों है।

3. Śrutvā sūtrasya māhātmyam śroturādarakāritā Śravṇnodgrahaṇaṃ syādityādau vācāṃ prayojanaṃ.

श्रुत्वा सूत्रस्य माहात्म्यं श्रोतुरादरकारिता।

श्रवणोद्ग्रहणं स्यादित्यादौ वाचां प्रयोजनम्।।

4. Aaiśvaryasya samagrasya rūpasya yaśasaḥ śriyaḥ.

jñānasyātha prayatnasya ṣaṇṇaṃ bhaga iti śrutiḥ.

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य रूपस्य यशसः श्रियः।

ज्ञानस्याथ प्रयत्नस्य षण्णां भग इति श्रुतिः।।

5. Śrāvastyāsmiti. Śravastasya rserāśramapadaniveśitatvāt śrvastinagarī. Tadupalaksitopi deśaviṣesah śrāvatī. Vihasatiti cankramaṇādilakṣaṇaiścatrbhiscryāpathaiḥ muditālakṣaṇairvā caturbhirapramāṇaiḥ smeti bhūtakalaṃ darśayati. Śrāvatīnagarī suvistirṇā vijñāyate.

श्रावस्त्यामिति। श्रवस्तस्य ऋषेराश्रमपदनिवेशितत्वात् श्रावस्तीनगरी। तदुपलक्षितोऽपि देशविशेषः श्रावस्ती। विहरतीति चङ्क्रमणादिलक्षणैश्चतुर्भिरीर्यापर्थः मुदिता–लक्षणैर्वा चतुर्भिरप्रमाणैः। स्मेति भूतकालं दर्शयति। श्रावस्तीनगरी सुविस्तीर्णा विज्ञायते।

6. Aranaikāntamadhuraṃ saraṇaikāntaniṣ-ṭhuraṃ.

Na ca mādhurayanaiṣṭhuryadoṣayuktaṃ vacastava.

अरणैकान्तधुरं सरणैकान्तनिष्ठुरम्।

न च माधुर्यनैष्ठुर्यदोषयुक्तं वचस्तव।।

7. Atha kasmāt skandhānāmeṣo ? mukramaḥ ? yathaudārikataḥ. Kathaṃ ? Rūpaṃ hi sapratighātvāt sarvaudārikaṃ. Arūpināṃ vedanā pracāravdarikatayā. Tathā hi vyapadiśarti 'haste me vedanā, pāde me vedaniti. Vijñanasaṃskārbhyāmandārikatarā saṃjña. Vijñānāt saṃskārā iti. Ato yadavdarikaṃ tatpūrvamuktaṃ.

अथ कस्मात् स्कन्धानामेषोऽनुक्रमः ? यथौदारिकतः। कथं? रूपं हि सप्रतिघत्वात् सर्वौदारिकम्। अरूपिणां वेदना प्रचारौदरिकतया। तथा हि व्यपदिशन्ति 'हस्ते मे वेदना, पादे मे वेदने'ति। विज्ञानसंस्काराभ्यामौदरिकतरा संज्ञा। विज्ञानात् संस्कारा इति। अतो यादौदारिकं तत्पूर्वमुक्तम्।